होशियार ! खबरदार !

संस्कृति के दरोगाओं का 'संस्कृति रक्षा' अभियान

कहीं आतंकी छापामारी तो कहीं घर-घर शिक्षा अभियान

मीनाक्षी

भारतीय संस्कृति के दरोगाओं का संस्कृति रक्षा अभियान नये-नये रूपों में जारी है। संस्कृति के महा-अनुष्ठान, प्रचार अभियान, फतवेबाजी के साथ-साथ आतंकी छापामारी की कार्रवाइयां भी जारी हैं।

बीते वेलेंटाइन डे (14 फरवरी) को देश भर में कई जगहों पर शिव सैनिकों ने अपना चिरपरिचित ताण्डव नृत्य किया। फूलों के गुलदस्तों की दुकानों और कार्ड गैलरियों में जमकर तोड़फोड़ व फाड़ाफाड़ी की। मकसद वही पुराना था—भारतीय संस्कृति की रक्षा। संघ परिवार की सभी शाखाओं ने इसका टेंडर जो ले रखा है। वेलेंटाइन डे के विरोध के बारे में उनका कहना था कि यह पाश्चात्य संस्कृति की देन है। सार्वजनिक रूप से प्रेम का प्रदर्शन करना भारतीय संस्कृति नहीं है! उनके अनुसार लड़के-लड़कियों का आपस में खुले प्रेम का इजहार करना समाज को अनैतिकता के गर्त में ले जायेगा। प्रेम करना ही है तो राष्ट्र से करो। आखिर इनके लिए इन्सानों का आपसी प्रेम खतरनाक जो है। इन्हीं तर्कों से शिवसैनिक प्रेम प्रदर्शन की सम्भावना वाले क्षेत्रों में जाकर लड़के-लड़कियों के पीछे लाठी भांजते रहे, दुकानों में तोड़फोड़ करते रहे और ठेठ आतंकवादी संगठनों की तरह इन कार्रवाइयों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने की घोषणा करते रहे। जाहिर है यह सब संस्कृति के दरोगाओं के हेड क्वार्टर के निर्देश पर ही हुआ होगा। पील करते हैं कि वे अप

ओर से

संस्कृति प्रहरियों की यह सबसे ताजा करतूत थी। संघ परिवार का मुख्यालय इस तरह की प्रतिरोधी कार्रवाइयों के अलावा प्रचारात्मक कार्रवाइयों की जबर्दस्त कारगर योजना बनाने और उसे पूरी कामयाबी के साथ अमली जामा पहनाने में उस्ताद है। यह इन योजनाकारों का ही प्रताप था कि चार साल पहले गणेश जी ने छककर दूध पिया था। इन्हीं योजनाकारों की तरकीब से उत्तर प्रदेश में पिछले कई महीनों से **"राष्ट्र जागरण अभियान"** के तहत संघ कार्यकर्ता घर-घर जाकर **'आदर्श हिन्दू घर'** नामक एक पुस्तिका बांट रहे हैं। हिन्दुत्व की इस आचार संहिता में बताया गया है कि हनीमून मनाने से लेकर जन्मदिन पर केक काटने तक जैसी बातें भारतीय संस्कारों के खिलाफ हैं। संघ प्रचारक समझा रहे हैं कि लड़कियां तंग कपड़े न पहनें और किसी भी हालत में सार्वजनिक रूप से प्रेम का इजहार न करें। अकेले प्रदेश की राजधानी लखनऊ में एक हजार से अधिक टोलियां बनायी गयी हैं। बंट रही पुस्तिका में परिवार नियोजन का भी विरोध किया गया है क्योंकि "इससे हिन्दुओं की संख्या में कमी आ रही है।" सांस्कृतिक पुलिस की भूमिका निभाते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री राजनाथ सिंह ने प्रदेश में सौन्दर्य प्रतियोगिताओं पर भी रोक लगा रखी है। उन्होंने कहा कि इससे बहुराष्ट्रीय कम्पनियां मजबूत हो रही हैं।

सवाल चाहे वेलेण्टाइन डे' का हो या सौन्दर्य प्रतियोगिताओं का, यह सही है कि भारतीय समाज के लिए ये कोई स्वस्थ मूल्यों के वाहक नहीं है। स्वस्थ मानवीय प्रेम की अभिव्यक्ति को मान्यता देने वाला एक वातावरण समाज में बने, यह पूरे समाज के जनतांत्रीकरण का सवाल है। लेकिन बाजार की सभ्यता ने प्रेम को उसकी गरिमा से शून्य कर ठेठ बिकाऊ और भोंडी नुमाइश की चीज बनाकर रख दिया है। इसी तरह सौन्दर्य प्रतियोगिताओं से स्त्रियों की स्वतंत्र पहचान, बनती हो और आत्म अभिव्यक्ति का अवसर मिलता हो, ऐसी बात हरगिज नहीं है। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली स्त्रियों की पहचान और अभिव्यक्ति का दायरा बाजार तय करता है और ये स्त्री की स्वतंत्र अस्मिता और गरिमा को मटियामेट करने वाले होते हैं। लेकिन, भारतीय संस्कृति के चोबदार जिसकी हिफाजत के नाम पर दरोगाई कर रहे हैं वह मध्ययुगीन पितृसत्तात्मक बर्बरता है जो स्त्री को अपनी जायदाद मानती है। जिसने पुरुष स्वामित्ववादी निरंकुश मानसिकता से स्त्री के लिए शील और मर्यादाओं की एक समूची आचार संहिता रची है। आज भूमण्डलीकरण के जमाने में विकृत पूंजीवाद के निरंकुश, स्त्री विरोधी बाजारू मूल्यों और मध्ययुगीन बर्बर मूल्यों का एक सहमेल बना है। इसलिए, स्त्री-सम्मान के प्रति राजनाथ जैसों और संघ परिवार के दरोगाओं की चिन्ताएं ठेठ मर्दवादी चिन्ताएं ही हैं।

संस्कृति के ये दरोगा अपनी सुविधा और जरूरत के अनुसार संस्कृति की लाज बचाने सीन में उतर आते हैं। माइकल जैक्सन को बम्बई बुलाकर नचाने में बाल ठाकरे को अपसंस्कृति नहीं दिखायी देती। लेकिन, वेलेंटाइन डे से खतरा महसूस होने लगता है। दर्जनों निजी देशी-विदेशी चैनलों के जरिये दिन-रात जब बीमार-विकृत संस्कृति परोसी जाती हो तो संघ परिवार को कोई असुविधा नहीं होती, लेकिन तमाशा खड़ा करने के लिए अश्लील फिल्मों के पोस्टरों पर कालिख पोतेंगे, सौन्दर्य प्रतियोगिताओं पर हल्ला बोलेंगे। लड़कियों के जींस पहनने पर रोक लगायेंगे।

स्त्रियों के बारे में खुद राजनाथ सिंह का नजरिया कैसा है यह उनके इस बयान से साफ हो जायेगा। पत्रकारों ने जब उनसे पूछा कि क्या वे सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में जज बनने वाले मंत्रियों-विधायकों पर भी प्रतिबन्ध लगायेंगे तो वह बोले "लोग तो आंखों की प्यास बुझाने के लिए क्या-क्या नहीं करते?" मुख्यमंत्री महोदय की भाषा काबिले गौर है। स्त्री की सुरक्षा एवं सम्मान का ढिंढोरा पीटने वाले राजनाथ सिंह की पार्टी में कई विधायकों पर छेड़छाड़ के आरोप लगे हुए हैं।

स्त्री के प्रति "राष्ट्रवादियों" का नजरिया मध्ययुगीन बर्बरता से आगे नहीं बढ़ पाया है। यह बार-बार साबित होता है। दिवंगत विजय राजे सिंधिया ने 1987 में सती को महिमामण्डित किया था। बाल ठाकरे गांधीवादी नेता उषा बेन मेहता और मृणाल गोरे के लिए फूहड़ भाषा का इस्तेमाल कर चुके हैं। पिछले ही वर्ष चुनाव के दौरान भाजपा और उसके सहयोगी दलों ने प्रतिद्वंद्वी महिला उम्मीदवारों के घटिया भाषा के इस्तेमाल की

(शेष पृष्ठ 27 पर)

उन्हें डर है कि वे इतिहास की विषयवस्तु न बन जायें

कृष्णगोविन्द सिंह

संघ परिवार ने शिक्षा सहित समूचे सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को भगवा रंग में रंग देने के किसी भी अवसर को हाथ से नहीं निकलने दिया। ऐसा ही एक बड़ा अवसर 1977 में आया था, जब इमर्जेन्सी के अत्याचारों से त्रस्त जनता ने प्रबल बहुमत के जरिये जनता पार्टी को सरकार में बैठाया। भाजपा का पुराना रूप जनसंघ जनता पार्टी का एक महत्वपूर्ण घटक था। एक योजना के तहत संघी "थिंक टैंकों" ने तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को एक "इतिहास विद्वान" की ओर से पत्र भिजवाया। पत्र में एन.सी.ई.आर.टी. के इतिहास पाठ्यक्रम पर भारी असन्तोष जाहिर करते हुए मार्क्सवादी इतिहासकारों को पानी पी-पीकर कोसा गया था। बिचारे मोरारजी देसाई सत्ता में बने रहने की मजबूरी के शिकार थे। पत्र में दिये गये मूर्खतापूर्ण एवं प्रतिक्रियावादी सुझावों को कूड़ेदान के हवाले करने के बजाय रामशरण शर्मा, विपिन चन्द्रा और रोमिला थापर जैसे विश्व प्रसिद्ध इतिहासकारों की पाठ्यपुस्तकों को हटा दिया गया। लेकिन उस समय यह अभियान बहुत दूर तक नहीं पहुंच सका क्योंकि घटक दलों की कुत्ताघसीटी के चलते जनता पार्टी की सरकार ढाई साल में ही गिर गयी।

लेकिन 1998 में जब भाजपा के नेतृत्व में केन्द्र में गठबन्धन सरकार बनी तो नये सिरे से यह मुहिम शुरू हुई। इस बार पूरी ताकत के साथ। तमाम शैक्षणिक एवं अकादमिक संस्थानों में चुन-चुनकर केसरिया ब्रिगेड के "बौद्धिकों" को भरा जा चुका है। इनकी मदद से सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के तमाम पाठ्यक्रमों को नीचे से लेकर ऊपर तक केसरिया रंग दिया जा रहा है। भाजपा शासित राज्यों में यह मुहिम काफी जोर पकड़ चुकी है।

भाजपा शासित राज्यों में चल रही मुहिम का पर्दाफाश छह-सात वर्षों पूर्व स्वयं एन.सी.ई.आर.टी. ने ही किया था जो आज स्वयं स्कूली शिक्षा के भगवाकरण का औजार बन चुकी है। पी.वी.नरसिंह राव के शासन के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. ने दो चरणों में देश भर के राज्यों में लगी पाठ्य-पुस्तकों का मूल्यांकन करवाया था। जनवरी 1993 और अक्टूबर 1994 में पेश रिपोर्टों में कहा गया था कि भाजपा शासित राज्यों में लगी पाठ्य पुस्तकों के जरिये घोर साम्प्रदायिक विचारों को फैलाया जा रहा है। मध्यकालीन भारत को पूरी तरह से हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच की दुश्मनी के रूप में दिखाया गया है। आधुनिक भारतीय इतिहास खण्ड में स्वाधीनता संग्राम को 20 पृष्ठों में ही निपटा दिया गया है। इसमें भी तीन पृष्ठ हेडगेवार के "महान योगदानों" पर ही खर्च हो जाते हैं। रिपोर्ट में मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आवश्यक कदम उठाने की सिफारिश की गयी थी। जाहिर है एन.सी.ई.आर.टी. ने यह उपक्रम कांग्रेसी राजनीति के तकाजों को पूरा करने के लिए ही किया था। ठीक उसी तरह, जिस तरह आज यह भाजपाई राजनीति के तकाजों को पूरा कर रही है।

संघ परिवार का सर्वाधिक कोपभाजन इतिहास को ही बनना पड़ रहा है। यह भी अनायास नहीं है। दरअसल, वह इतिहास के महत्व को अच्छी तरह समझता है। उसे यह पता है कि यदि नयी पीढ़ी को वैज्ञानिक इतिहास दृष्टि से और फासिस्ट जमातों के काले इतिहास से परिचित कराया जायेगा तो एक दिन वे सिर्फ इतिहास की विषयवस्तु बन जायेंगे। यही डर उन्हें इतिहास पर टूट पड़ने के लिए बाध्य कर रहा है। ●

(पृष्ठ 25 का शेष)

झड़ी लगा दी थी। प्रमोद महाजन ने जयललिता की तुलना **'इतिहास में वर्णित विषकन्याओं'** और सोनिया गांधी की तुलना मोनिका लेविंस्की से की थी। मुरली मनोहर जोशी ने सोनिया गांधी को **सूपर्णखा** कहा था। जार्ज फर्नांडीज ने भी सोनिया गांधी के लिए अशोभनीय भाषा का इस्तेमाल किया था। करुणानिधि ने जयललिता को **"झगड़ालू औरत"** कहा तो शरद यादव ने सक्रिय महिलाओं को **"परकटी"** कहा था।

इतना तो तय है कि संस्कृति के दरोगाओं को स्त्री के सम्मान की चिन्ता बिल्कुल नहीं है। लेकिन यह बात भी उतनी ही सही है कि बाजार आजादी के जो मूल्य परोस रहा है, वे स्त्री की गरिमा को बहाल करने वाले नहीं हैं। यह आजादी नहीं, एक कारागार से दूसरे कारागार में कैद करना है। इस सच्चाई की समझ से ही स्त्री की वास्तविक मुकम्मल पहचान कायम करने और मानवीय गरिमा बहाल करने के रास्ते खुलेंगे। ●

WORK HARD

GET ECLAT

EDUCATION POINT

centre for higher and competitive education

Education Point is organising screening test for pre Engineering and pre Medical on the same pattern of FIITJEE

Scholarship to Top 25 Students in Each Batch

Application forms available from Ist week of March

FOR MORE DETAILS CONTACT :

IIIrd floor, Nirman Ambica Arcade, opp. Gomti Motors, I.T. Crossing, Lucknow

Mob. 98380 42775 E-mail : v_42775@usa.net